हिन्दी काव्य में तीर्थराज प्रयाग

डॉ. भारतेंदु कुमार पाठक
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय हजरतबल
श्रीनगर-190006
कश्मीर – भारत

पूर्वकाल में पितामह ब्रह्मा द्वारा यज्ञादि क्रिया सम्पन्न किये जाने के कारण यह स्थान प्रयाग नाम से प्रसिद्ध हुआ | प्र उपसर्ग सहित यज्ञ/यजन मिलकर विशेष क्रियाविधि परक अर्थ प्रधान करता है गंगा यमुनादि नदियों का मिलन स्थान भी है जिसके मध्य संत/सहृदय रूपी सरस्वती ज्ञान धारा त्रिवेणी रूप में साकार है |

हिन्दी काव्य साहित्य में तीर्थराज प्रयाग संबंधित अनेक तथ्य व् साक्ष्य उपलब्ध है | महान रचनाकारों ने 'प्रयाग' वर्णन द्वारा अपने साहित्य को सुन्दर बनाया हैं | हिन्दी कवियों में गोस्वामी तुलसीदास ने अपने ग्रंथों में प्रयाग संदर्भित अनेक छन्द प्रस्तुत किया हैं | उन्होंने 'प्रयाग' को तीर्थों का राजा कहा है | यथा-'तीर्थराज प्रयाग' | प्राचीन काल में यहाँ पर भरद्वाज मुनि का आश्रम था-

"भरद्वाज मुनि बसहि प्रयागा |
भरद्वाज आश्रम अति पावन |
परम रम्य मुनिवर मन भावन |"

गोस्वामीजी ने अपने काव्य में जहाँ भी तीर्थों का वर्णन किया है वहाँ प्रयाग का अवश्य चित्रण किया है | कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

"माघ मकरगत रवि जब होई |
तीरथ पतिहिं आव सब कोई ||
पूजहिं माधव पद जलजाता |
परसि अखय बटु हरषहिं गाता |"[1]

अन्यत्र-

"एहि प्रकार भरि माघ नहाही |
एक बार मरी मकर नहाए |
तीर्थराज समाज सुधर्मा |"[2]

अर्थात – प्रयाग तीर्थों का राजा है | यहाँ पर भरद्वाज मुनि निवास करते हैं | यह स्थान अति सुन्दर व् मुनियों को भाने वाला है | जब मघ माह के समय सूर्य मकर राशि पर स्थित होता है, तब सभी (मुनि, साधु व धार्मिक) प्रयाग आते है | वे सभी श्री माधव की पूजा करते हैं और उनके चरण कमल को स्पर्श करते हैं | वे अक्षय वट (को देखकर) प्रसन्न होते है | वहाँ पर भरद्वाज के आश्रम पर मुनियों का समाज होता है, जो स्नान हेतु पधारे हैं | इस प्रकार पूरे माघ भर स्नान कार्य अनवरत चलता रहता है | यथा-

"तहाँ होई मुनि रिषय समाजा |
जाहि जे मज्जन तीरथ राजा ||"[3]

'श्रीरामचरित मानस' के अतिरिक्त 'कवितावली' नामक रचना में 'तीर्थराज सुषमा' से एक छन्द है-

"देव कहै अपनी अपना, अवलोकन तीरथराज चलो रे |
देखि मिटैं अपराध आगाध, निमज्जत साधु समाज चलो रे |
सोहै सितासित को मिलिबो तुलसी हुलसी हिय हेरि हलोरे |
मानो हरे तृन चारू चरैं बगरे सुरधेनु के धौल कलोर |"[4]

"देवतालोग आपस में कहते हैं- अरे! तीर्थराज प्रयाग का दर्शन करने चलो उनके दर्शनमात्र से बड़े-बड़े अपराध नष्ट हो

जाते हैं, वहीं अच्छे-अच्छे साधु स्नान किया करते हैं | तुलसीदास जी कहते हैं, वहाँ श्रीगंगा व् यमुना के शुभ एवं श्याम वर्ण जल का संगम बड़ा हर्षित होता हैं, मानो इधर-उधर फैले हुए कामधेनु के शुक्ल वर्ण मनोहर बछड़े हरी-हरी घास चर रहे हों |"

इस प्रकार गोस्वामी जी ने अपने साहित्य में तीर्थराज प्रयाग का चित्रण पूर्व तन्मयता के साथ किया है

रीतिकालीन कवियों ने सर्वोच्च वस्तु व सौन्दर्य की तुलना 'प्रयाग' से की है | सतसईकार का कथन है-

'पग-पग होत प्रयाग'-[5]

तो पदमाकर ने भी कहा है-

'पैरे जहाँ इ जहाँ वह बाल तहां तहां ताल में होत त्रिवेनी'

कहने का तात्पर्य है कि प्रयाग अपने धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक व् अन्य कारणों से भी महत्वपूर्ण स्थान है, जो महाकवियों के काव्य का विषय बनता रहा है | सम्पूर्ण देश की जनता व् विश्व के धार्मिक व्यक्ति क्षेत्र, भाषा, विचार की भावना भूलकर एक देशीय मिलन हेतु यहाँ सांस्कृतिक यज्ञ सम्पन्न करने आते हैं | यहां का संगम मात्र नदियों का संगम न होकर, क्षेत्र, जाति,प्रथा, कला, विद्या व् विचारधाराओं का संगम है |

सन्दर्भ –

1. श्रीरामचरित मानस-गीता प्रेस गोरखपुर पृ.-40, एक सौ बाईसवाँ पुनर्मुद्रण, सं.2069, (मूल मझला साइज)
2. उपर्युक्त,पृ.-41
3. उपर्युक्त,पृ.-41
4. 'कवितावली'- गो.तुलसीदास-गीता प्रेस गोरखपुर, पृ.-140, संस्करण सं. 2074
5. सतसई-कविवर बिहारीलाल

मो.-7889760568

ई.मेल-pathakupandkasmir@gmail.com